RAWATSAR P.G. COLLEGE

'Sanskriti Ka Badlta Swaroop Aur AI Ki Bhumika' (SBSAIB-2025)

DATE: 25 January 2025

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)

Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

AI बनाम मानव निर्मित कला

भाष्कर पांडे, शोधार्थी, चित्रकला विभाग, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, परिसर अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

प्राचीन समय से ही मानव अपनी समझ, कल्पनाशीलता को बढ़ता आया है। निरंतर रचनात्मक रहना ही मानव की उन्नति में सहायक सिद्ध हुआ है। प्रागैतिहासिक काल से ही मनुष्य ने अपनी अनुभूति को अभिव्यक्त करने के माध्यमों को समझा और इस्तेमाल किया। जिनके आधार पर हम वर्तमान में रहकर भी भूतकाल में मानव सभ्यताओं के इतिहास आदि की जानकारी हासिल कर पाये हैं। कला निरंतर चलने वाली सम्पूर्ण विश्व की एक मात्र शक्ति है जो मानव समुदाय को एक सूत्र में बांधने का कार्य करती है।[प] दूसरी तरफ AI है जो मानव की रचनात्मकता और कला के प्रति प्रेम को दर्शाती है। जिसका अर्थ कृत्रिम तरीके से विकसित की गयी बौद्धिक क्षमता या मशीनों द्वारा मानव की विचार प्रक्रियाओं का अनुकरण कर मानव बुद्दिमत्ता की नकल करना माना जा सकता है।[पप]

1950 में मशीनों के इंसानों की तरह सोच–समझ कर कार्य करने को AI कहा गया, जिसके बाद AI में निरंतर हुए बदलावों से इसकी परिभाषा बदलती रही। तकनीकी रूप में जल्दी और नवीन कार्यों को तुरंत कर पाने की अपनी खासियत के कारण वर्तमान में AI तेजी से हमारे जीवन में बदलाव ला रही है।

AI बनाम मानव निर्मित कला की स्वीकृति– AI ने अभिव्यक्ति के लिए नवीन द्वार खोल दिये हैं। न सिर्फ कलाकार बल्कि कला कौशल में परांगत न होने पर भी मानव AI का इस्तेमाल कर अपनी अभिव्यक्ति कर पाने में सक्षम हुआ है। वर्तमान में डिजिटल मार्केटिंग, वीडियो गेम, विज्ञापन, डिज़ाइनिंग आदि के लिए AI की सहायता लेकर पल भर में ही कृत्रिम कला प्राप्त की जा सकती है। मानव निर्मित कला का उद्देश्य अपनी आन्तरिक अनुभूति को अभिव्यक्त करना है। जिसमें मानव अनुभवों, समाज, भाव, प्रकृति आदि से प्रेरणा लेकर सामाजिक मूल्यों और सांस्कृतिक परम्पराओं के साथ मानवीय संवेदनाओं को व्यक्त करता है। मानव अपनी कल्पनाशीलता और रचनात्मकता के मध्याम से एक से बढ़कर एक कृतियों का निर्माण कर सकता है। मानव मस्तिष्क बिना किसी की नक़ल किये निरंतर नवीन रचनात्मक कला सृजन में तत्पर रहता है।

नवलगढ़ पोद्दार हवेली की भित्ति पर बना ढोला–मारू का चित्र

मूल्यांकन– AI तकनीकी और व्यावसायिक रूप में तेज और बड़े पैमाने पर कला सृजन किया जा सकता है। इसके अलावा AI सीमित कार्यों को ही बेहतरीन ढंग से करने में विशेषज्ञता हासिल किये हुए है। इसके विपरीत मानव अपनी भावनाओं, अनुभव, समाज, संस्कृति और प्रकृति से प्रेरणा लेकर निरंतर नवीन सृजन कर सकता है। मानव निर्मित कला का भावात्मक जुड़ाव रहता है। AI के विपरीत मानव निर्मित कला हर पहलू पर ध्यान देते हुए समय साध्य और धीमी होती है। AI से बनी कलाकृतियों में भावात्मक गहराई और रचनात्मकता का आभाव देखने को मिलता है। इससे बनी कलाकृतियों में पूर्व में की गयी कला या मानव मस्तिष्क में बनी नवीन कला की नक़ल या पुनः संयोजन मात्र होती है। AI अपने सीमित डेटाबेस के आधार पर ही या मानवीय कार्यों से प्रेरित कलाकृतियों का निर्माण कर सकता है. डेटाबेस के सीमित होने के साथ उसकी गुणवत्ता और विविधता AI से प्राप्त हुई कला में प्रभाव डालती है।

नवलगढ़ पोद्दार हवेली की भित्ति पर बने ढोला– मारू चित्र की AI द्वारा नक़ल

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

AI के आने से वर्तमान में कलाकारों के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। यह प्रतिस्पर्धा सिर्फ डिजिटल माध्यम में ही देखने को मिलती है। कम खर्चे और कम समय में AI का उपयोग काफी हद तक मानव के लिए चिंता का विषय है। AI में निरंतर सुधार होना तय है जो हो सकता है भविष्य में मानव की कल्पनाशीलता और नवीनता के आस–पास तक हो जाए । AI के आने से मानव की मूल कृति की चोरी और उसकी प्रमाणिकता, पहचान को सुरक्षित रखने का सवाल उठना लाजमी है। AI से निर्मित कला के दुष्प्रभाव भी देखने को मिलते हैं। जिसमें AI द्वारा फेस स्वैप करना शमिल है। फैस स्वैप में AI द्वारा किसी भी व्यक्ति का चेहरा अन्य वीडियो या फोटो में इस्तेमाल किया जाता है। बेशक AI ने मानवीय कार्यों को आसान बनाया हो लेकिन अगर इसका इस्तेमाल सही तरीके और सीमित नहीं किया गया तो भविष्य में इसका इस्तेमाल भयावह साबित हो सकता है।

मानव निर्मित कला भावनात्मक और सांस्कृतिक महत्त्व के कारण अमूल्य है। समय साध्य होकर धीमी गति से किए सृजन न सिर्फ कलाकार को बल्कि उसकी अनुभूति करने वाले से भी आत्मसात हो जाता है। जिसके बाद दर्शक आनन्द की प्राप्ति करता है। अजंता, एलोरा गुफाओं और शेखावाटी के मानव निर्मित भित्ति चित्र इतिहास, परम्पराओं, संस्कृति आद को संरक्षित करते देखे जा सकते हैं। धर्म, संस्कृति, परम्परा तथा लोक तत्वों के अतिरिक्त कला सृजन करवाने वालों की अभिरुचि से कलाकार प्रभावित होता है और कला सृजन करता है।[पपप]

मानव वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला आदि के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति कर सकता है। जबकि AI सिर्फ डिजिटल कला तक ही सीमित है। मानव निर्मित कला निष्पक्ष होकर समाज के समक्ष संवाद करते आईने की भांति होती ही, जो समाज को प्रभावित करने में सक्षम है। अगर मानव, AI को सहयोगी बनाकर साथ लेकर चले तो मानव अपने रचनात्मक द्रष्टिकोण में अत्यधिक विस्तार कर सकता है। AI का सहयोग नवीन, उपयोगी और शानदार प्रतिफल की ओर ले जाने में सक्षम है। वास्तविकता में देखा जाए तो AI मानव जीवन में शामिल हो चुका है। व्हाट्सैप से गूगल तक सभी में AI तकनीक का इस्तेमाल कर हमारे कार्यों को और भी सरल बनाया गया है। मानव की कुछ नवीन रचनाओं और कार्यों को सरल बनाने की चेष्टा को समझे तो यह कहा जा सकता है कि यदि AI को मानवीय भावनाओं के अनुसार सोचने, अनुभव करने, समझने और अभिव्यक्त कर पाने की क्षमता दे दी जाए तो यह मानव की ही भांति कला के नवीन रूप और आयाम विकसित कर सकता है.

---

[i] चतुर्वेदी, डॉ. ममता : समकालीन भारतीय कला, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, 2013, पृष्ठ संख्या–3

[ii] www.nic.in/centre-of-excellence-for-artificial-intelligence/

[iii] सिन्हा, डॉ. रूपम : शेखावाटी भित्ति कला एवं सामयिक संस्कृति का प्रभाव, कला प्रकाशन, 2016, पृष्ठ संख्या–38